''सैध्दांतिक तथा क्रियात्मक स्तर पर तबले का रियाज़ः एक अध्ययन''

शोध सार :

अभिजात भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में अवनध्द वाद्य– 'तबला' का स्थान एवं महत्व अनन्य साधारण है। तबला वादन का महत्व उसके 'रियाज़' में निहित होता है। 'लय–ताल–नाद' वाद्य के रूप में सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य के रूप में मान्यता प्राप्त इस वाद्य का रियाज़ भी उतना ही श्रेष्ठतम होना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का मानना है। तबले का रियाज़ यह बुध्दि द्वारा भली–भाँति समझकर अभ्यासपूर्ण तरीके से होना आवश्यक होता है, इसका मतलब यह है की, तबले के रियाज का मुल आधार बौध्दिक पक्ष ही है। किन्तु, तबले के रियाज़ की विशाल व्याप्ति को देखते हुए एवं उसकी सुक्ष्मता का विचार करते हुए, शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रबंध को 'बौध्दिक पक्ष' यानी 'सैध्दांतिक रियाज़' और 'शारीरिक पक्ष' यानी 'क्रियात्मक रियाज़' इन दो प्रमुख विभागों में विभाजित करना उचित समझा है, ताँकि संबंधित मुल विषय को विस्तारसहित समझने में सुलभता हो सके। अपितु, इन दोनों पक्षों का मुल आधार शास्त्र ही है, ऐसा शोधार्थी का मत है। शास्त्र यानी नियम, अनुशासन या सिध्दांत। इस तरह विचार किया जाए तो, तबला वादन में शास्त्रीय दृष्टिकोन के आधार पर किया गया 'बौध्दिक रियाज' ही तबले का 'सैध्दांतिक रियाज़' है, और इसी की आचरित कृती यानी प्रत्यक्ष वादन (शारीरिक) कृती है – तबले का 'क्रियात्मक रियाज़' है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। संक्षेप में, तबले के रियाज़ में साधक का अभ्यासपूर्ण 'विचार' यानी बौध्दिक रियाज होता है और इसी विचार का प्रत्यक्ष 'आचार' यानी शारीरिक रियाज़ होता है। साधक का रियाज़ यह गुरू के मार्गदर्शन में होना जरूरी होता है। तबले के रियाज़ में साधक की तद्अनुरूप वैचारिकता एवं उसकी आचरण क्रिया, इन दोनों का मुलआधार बौध्दिक पक्ष ही होता है, जैस की, बगैर शास्त्र के कला और बगैर कला के शास्त्र अधुरा होता है, बल्कि कला और शास्त्र दोनों ही परस्पर पूरक होते हैं। तबले के रियाज़ में सैध्दांतिक और क्रियात्मक इन दोनों पक्षों में साधक का 'विचारों का रियाज़' होना

महत्वपूर्ण है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। इन दोनों में साधक का 'विचार' यह सामायिक होता है, इसलिए तबला साधक के विचारपूर्ण एवं अभ्यासपूर्ण रियाज़ की फलश्रुति होती है उसकी सफल तबला वादन प्रस्तुति...! साथ ही तबले का रियाज़ मन की एकाग्रता से और मन से होना आवश्यक होता है।

इस तरह, प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वारा शोधार्थी का यह भी प्रयास रहा है की, तबले के रियाज़ एवं उसकी वादन प्रस्तुति के परस्पर संबंध पर प्रकाश ड़ाला जाए। विद्वानों का अनुभवपूर्ण कथन हैं कि, 'संगीत कला में रियाज' यह केवल करने की बात है, न कि बोलने अथवा लिखने की' किन्तु, शोधार्थी का यह प्रतिनिवेदन है की, तबला इस वाद्य की व्यापकता एवं वादन–कौशल्य–विकास को देखते हुए और इस वाद्य की हुई सर्वांगीण प्रगति पर दृष्टिपात करें तो, तबले के रियाज़ को शास्त्रीय पक्ष का आधार देते हुए वह कथित करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि 'तबले का रियाज़' यह विषय भी इस वाद्य के भाँती उतना ही विशाल एवं व्यापक हैं। तबले का रियाज़ उचित ढंग से, योग्य तरीके से एवं योग्य दिशा से होना जरूरी है। इन सभी बातों को शास्त्रीय आधार देते हुए तबले के रियाज़ के बारें में महत्वपूर्ण तत्वों का लिखित रूप में उद्घाटन करना, यह इस शोध प्रबंध का प्रमुख उद्देश है। तबले के रियाज़ के साथ–साथ साधक को तबले की सभी संकल्पनाओं एवं घरानों और उनकी वादन शैली– वादन विचार के बारे में भी जानकारी रखते हुए यह रियाज करना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का मानना है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधार्थी ने तबले के 'रियाज़' को साधक का केंद्रबिंदु मानते हुए, रियाज़ की सर्वांगीणदृष्टि से विस्तृत चर्चा करने का एक अभ्यासपूर्वक प्रयास किया हैं। तबला वादन कला में रियाज का कितना महत्व है? यह इस शोधप्रबंध का मुख्य उद्देश है। इस तरह, तबले के रियाज़ के बारें में और भी कई महत्वपूर्ण बातों को उजागर करते हुए उनकी पूर्ति करना, यह इस शोधप्रबंध का उद्देश है। इस शोधप्रबंध की आवश्यकता इसलिए भी है की, तबले के रियाज़ के बारे में अब तक जो भी कोई लिखित रूप में विधिवत जानकारी मिली है, वह कम मात्रा में उपलब्ध है। प्रस्तुत शोधप्रबंध तबला साधकों को विशेष रूप से 'रियाज़' के बारें में निश्चित रूप से उपयोगी सिध्द होगा, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का अध्ययन करते हुए शोधार्थी ने यह पाया है की, तबला साधक के लिए 'अभ्यास, रियाज और प्रस्तुति', ये तीन महत्वपूर्ण अवस्थाएँ होती है, जो परस्पर संबंधित होती है। अपितु, तबला साधक ने अपने रियाज में इसका अनुभव लेना अत्यंत आवश्यक है, जिसके लिए रियाज में तबला साधक की शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक स्तर पर उपस्थिती रहना अनिवार्य है। तबला साधक के अभ्यासपूर्ण रियाज़ के फलस्वरूप हुई सफल कलाप्रस्तुति के माध्यास से ही उस साधक की सफल कलाकार बनने की मंजिल दूर नहीं होती, ऐसा शोधार्थी का आत्मविश्वास के साथ मानना है। तबला साधक के अभ्यासपूर्ण रियाज की यह फलश्रुति हैं। तबलासाधक का यहीं सही रूप में विकास भी होता है। तबला साधक अपनी सर्वांगीण प्रगति साधने हेतु, प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से जरूर लाभान्वित होंगे, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। तबला साधक के 'गुरू और रियाज़' यह दों महत्वपूर्ण अंग होते है। सारांश, तबला वादन कला में 'रियाज' यह एक मुलभुत सत्य हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध लिखने हेतु, शोधार्थी ने माध्यमिक स्त्रोतों का सहारा लिया गया हैं। साथ ही, तबला जगत के गुरूजन–गुणीजन विद्वान–कलाकारों का साक्षात्कार लेकर उनका विचार जानने की कोशिश की गयी है। इन सभी मूर्धन्य कलाकारों के विचार एवं अनुभवों का आदर्श सामने रखते हुए शोधार्थी ने अपने विचारों के साथ प्रस्तुत शोध प्रबंध पूर्ण करने का यह एक अत्यंत कष्टसाध्य एवं अभ्यासपूर्वक प्रयास किया हैं। इसके साथ ही, तबला विषय पर अनेक सन्माननीय विचारवंतों का ग्रंथकारों का उनके ग्रंथरूप विचारों के माध्याम से आधार लिया गया है।

शोधार्थी

सचिन कचोटे